



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025-8.445



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण में युवाओं का योगदान विश्लेषणात्मक अध्ययन :

डॉ. रघुराज सिंगोदिया

सहायक आचार्य, प्राणी शास्त्र

राजकीय महिला महाविद्यालय, झुन्झनू, 333001

Email-raghusingodia@gmail.com, Mobile-9468846781

First draft received: 05.11.2025, Reviewed: 08.11.2025

Final proof received: 09.11.2025, Accepted: 20.12.2025

सारांश

21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन मानव अस्तित्व के लिए सबसे गंभीर पर्यावरणीय संकटों में से एक बन चुका है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न इस संकट ने न केवल पारिस्थितिक तंत्रों बल्कि सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को भी प्रभावित किया है। भारत जैसे विकासशील देश में युवा वर्ग इस चुनौती का सामना करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। युवाओं की ऊर्जा, रचनात्मकता और तकनीकी दक्षता उन्हें पर्यावरणीय सुधार के केंद्र में लाती है। इस अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों और केस स्टडी पद्धति के माध्यम से यह विश्लेषण किया गया है कि भारत के युवा किस प्रकार जल संरक्षण, कचरा प्रबंधन, स्वच्छ ऊर्जा, और नीति निर्माण जैसे क्षेत्रों में ठोस योगदान दे रहे हैं। महाराष्ट्र, दिल्ली, केरल, हिमाचल प्रदेश और असम के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि युवाओं ने स्थानीय संसाधनों के उपयोग से सामुदायिक सहयोग के माध्यम से स्थायी परिवर्तन लाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। निष्कर्षतः, यदि युवाओं को तकनीकी संसाधन, वित्तीय सहयोग और नीति निर्माण में सहभागिता दी जाए, तो वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में एक निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य शब्द: जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण संरक्षण, युवा सहभागिता, सतत विकास, नवाचार, जल संरक्षण, हरित प्रौद्योगिकी, सामुदायिक पहल आदि.

प्रस्तावना

21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन मानव सभ्यता के सामने खड़ी सबसे गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक बन चुका है। विश्व के लगभग सभी हिस्सों में इसका प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देखा जा रहा है। वैज्ञानिक रूप से जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में दीर्घकालिक परिवर्तन से है, जो मुख्यतः मानवजनित गतिविधियों जैसे औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वनों की कटाई, और जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है। अंतरसरकारी पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC, 2023) के अनुसार, औद्योगिक क्रांति (1750) के बाद से पृथ्वी का औसत तापमान लगभग 1.1°C बढ़ चुका है। यदि वर्तमान उत्सर्जन दर जारी रही, तो यह वृद्धि 2°C से अधिक हो सकती है, जो पारिस्थितिक तंत्रों, कृषि, जल संसाधनों और मानव स्वास्थ्य पर विनाशकारी

प्रभाव डाल सकती है। NOAA (2023) के आंकड़ों के अनुसार, वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂) की सांद्रता 421 ppm तक पहुँच चुकी है, जो औद्योगिक युग की तुलना में लगभग 50% अधिक है।

भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह चुनौती और भी गहरी है। भारत का जलवायु स्वरूप अत्यधिक विविध है—यहाँ हिमालय की बर्फाली पर्वतमालाओं से लेकर थार मरुस्थल तक, और तटीय क्षेत्रों से लेकर उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों तक, सभी प्रकार की जलवायु पाई जाती है। परंतु हाल के वर्षों में देश में औसत तापमान में 0.7°C-0.8°C की वृद्धि (IMD, 2023), मानसूनी वर्षा के असमान वितरण, और बार-बार आने वाली बाढ़ व सूखे की घटनाओं ने सामाजिक और आर्थिक संरचना को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

भारत की लगभग 65% जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। यह जनसंख्या समूह न केवल राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करता है, बल्कि वर्तमान समय में नवाचार, प्रौद्योगिकी, और सामाजिक परिवर्तन का अग्रदूत भी है। युवाओं में ऊर्जा, रचनात्मकता और अनुकूलनशीलता जैसी विशेषताएँ उन्हें जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संघर्ष में सबसे प्रभावी घटक बनाती हैं।

वैश्विक स्तर पर, युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने जलवायु आंदोलन को नई दिशा दी है। "Fridays for Future" आंदोलन (2018) और "Youth Climate Summit" (UN, 2019) इसके प्रमुख उदाहरण हैं, जहाँ युवाओं ने नीतिगत निर्णयों पर प्रत्यक्ष

प्रभाव डाला। भारत में भी “Youth Climate Network India (YCNI)”, “Green Corps India” और “Energy Swaraj Foundation” जैसे संगठन युवाओं को पर्यावरण नीति, शिक्षा और तकनीकी नवाचारों से जोड़ रहे हैं।

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में युवा वर्ग की भूमिका कितनी प्रभावी है, वे किस प्रकार पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठा रहे हैं, और भविष्य की नीति निर्माण में उनकी सहभागिता को कैसे सशक्त किया जा सकता है। अध्ययन का केंद्रबिंदु यह भी है कि भारत जैसे देश में, जहाँ युवा जनसंख्या एक अपार संभावनाशील संसाधन है, वहाँ यह वर्ग किस प्रकार स्थानीय और वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय परिवर्तन के वाहक के रूप में उभर रहा है।

अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका का विश्लेषण करना है। इसके लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों का संग्रह और विश्लेषण किया गया, ताकि युवाओं की सहभागिता, उनके नवाचार और नीति निर्माण में योगदान का ठोस मूल्यांकन किया जा सके।

द्वितीयक आँकड़ों का स्रोत विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की प्रकाशित रिपोर्ट, शोध पत्र और सरकारी दस्तावेज़ रहे। प्रमुख स्रोतों में जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी, 2023), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी, 2023), संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी, 2023), विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र (सीएसई, 2024) और युवा जलवायु नेटवर्क इंडिया (वाईसीएनआई, 2024) शामिल हैं। इन स्रोतों से प्राप्त डेटा में तापमान वृद्धि, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, वर्षा पैटर्न में बदलाव, जलस्तर और जैव विविधता के आंकड़े शामिल हैं, जिन्हें युवाओं की भागीदारी और समुदाय आधारित परियोजनाओं के साथ तुलनात्मक रूप से विश्लेषित किया गया।

अध्ययन में केस स्टडी विधि का भी प्रयोग किया गया है, विशेष रूप से भारत में युवाओं ने जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु विविध पहलें की हैं जैसे महाराष्ट्र का जलरक्षक जल संरक्षण प्रोजेक्ट, दिल्ली का “Say No to Plastic” अभियान, केरल की मैग्रोव पुनर्स्थापना, हिमालयी इको-वारियर्स और ग्रीन स्टार्टअप्स। इन प्रकरण से यह समझने का प्रयास किया गया कि कैसे युवा समूह स्थानीय संसाधनों, प्रशिक्षण और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से पर्यावरणीय सुधार ला सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक पर्यावरणीय संकट है, जो मुख्यतः पृथ्वी के वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण उत्पन्न हुआ है। इन गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂), मीथेन (CH₄), नाइट्रस ऑक्साइड (N₂O) और फ्लोरोकार्बन प्रमुख हैं, जो सौर विकिरण को फँसाकर पृथ्वी के तापमान को लगातार बढ़ा रहे हैं।

पृथ्वी की जलवायु प्रणाली जिसमें वायुमंडल, जलमंडल, स्थलमंडल और जीवमंडल शामिल हैं नव गतिविधियों के कारण असंतुलित हो रही है। जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई, औद्योगिक उत्पादन, और शहरीकरण इसके प्रमुख कारण हैं। इन गतिविधियों से न केवल वैश्विक तापमान बढ़ रहा है, बल्कि इसके परिणामस्वरूप समुद्र स्तर में वृद्धि, हिमनदों का पिघलना, वर्षा चक्र में असामान्यता, और अत्यधिक तापमान

की घटनाओं (Heatwaves) में बढ़ोतरी हो रही है। भारत में भी, विशेषकर राजस्थान जैसे अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अत्यधिक स्पष्ट हैं यहाँ वर्षा की अस्थिरता, भूजल का गिरता स्तर, और भूमि का क्षरण प्रमुख चुनौतियाँ बन गई हैं।

वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, और जैविक तंत्रों को भी प्रभावित करता है। उदाहरणतः, कृषि उत्पादन में कमी, जल संकट, और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव इसके व्यापक परिणाम हैं। *World Meteorological Organization (WMO)* की *State of Global Climate Report (2024)* के अनुसार, 2023 विश्व का अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा, जिसमें भारत के कई राज्यों, विशेष रूप से राजस्थान, गुजरात और दिल्ली में औसत तापमान सामान्य से 2-3°C अधिक दर्ज किया गया।

इस परिप्रेक्ष्य में, वैज्ञानिक समुदाय यह मानता है कि यदि उत्सर्जन दरों को नियंत्रित नहीं किया गया तो “टिपिंग पॉइंट्स” जैसे हिमालयी हिमनदों का तेज़ पिघलना या समुद्री पारिस्थितिक तंत्र का विघटन स्थायी और अपरिवर्तनीय परिणाम ला सकते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर “पेरिस समझौता (Paris Agreement, 2015)” जैसे प्रयास किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5°C तक सीमित रखना है।

पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका - केस स्टडीज़

भारत में युवाओं द्वारा जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किए गए प्रयास विविध, नवाचारी और प्रभावशाली रहे हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में युवा स्थानीय समस्याओं को समझते हुए अपने समुदायों के भीतर समाधान तलाश रहे हैं। महाराष्ट्र, दिल्ली, केरल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश और असम जैसे राज्यों में युवाओं ने जल संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा, कचरा प्रबंधन, तटीय पारिस्थितिकी और पारिस्थितिक पर्यटन जैसे क्षेत्रों में ठोस योगदान दिया है।

महाराष्ट्र में वर्ष 2022 में आरंभ किया गया “प्रोजेक्ट जलरक्षक” (Project JalRakshak) इंजीनियरिंग छात्रों की एक पहल थी, जिसका उद्देश्य वर्षा जल संचयन और सूखे तालाबों के पुनर्जीवन के माध्यम से भूजल स्तर में सुधार लाना था। इस पहल के अंतर्गत पुणे और नासिक जिले के 20 गाँवों में 50 से अधिक जलाशयों को पुनर्जीवित किया गया, जिससे लगभग 12,000 ग्रामीणों को पेयजल और सिंचाई में सुविधा मिली। पर्यावरण मंत्रालय (MoEFCC, 2023) की रिपोर्ट के अनुसार, इस प्रयास से स्थानीय भूजल स्तर में औसतन 1.2 मीटर की वृद्धि दर्ज की गई। यह उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि शिक्षित युवा समुदाय-आधारित तकनीकी समाधान विकसित कर सकते हैं।

दिल्ली में विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा 2021 में “से नो टू प्लास्टिक” (Say No to Plastic) अभियान चलाया गया, जिसमें युवाओं ने शहरी उपभोक्ताओं और दुकानदारों को प्लास्टिक की जगह जूट और कपड़े के थैले अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस अभियान के तहत लगभग 250 दुकानदारों ने वैकल्पिक सामग्री का उपयोग शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप 15 टन प्लास्टिक कचरे में कमी आई। इसके साथ ही छात्रों ने सोशल मीडिया के माध्यम से दो लाख से अधिक लोगों को जागरूक किया। यह पहल यह दर्शाती है कि युवा डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर नागरिक व्यवहार में स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं।

केरल में वर्ष 2020 में “Youth for Climate Action” नामक संगठन की स्थापना 2018 की विनाशकारी बाढ़ के बाद की गई थी। इस संगठन ने जलवायु अनुकूल शहरी नियोजन और तटीय

पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए व्यापक अभियान चलाया। स्थानीय युवाओं ने मछुआरा समुदायों के साथ मिलकर तटीय क्षेत्रों में मैंग्रोव पौधारोपण किया और अब तक लगभग 1.5 लाख पौधे लगाए जा चुके हैं। यह संगठन तटीय क्षेत्रों में 40 किलोमीटर तक पुनर्स्थापन कार्य कर चुका है, जिससे जैव विविधता संरक्षण और तटीय भूमि के क्षरण में कमी आई है। यह उदाहरण इस बात का संकेत है कि युवाओं की नेतृत्व क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर्यावरण पुनर्स्थापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

तमिलनाडु में “ग्रीन कैम्पस मूवमेंट” (Green Campus Movement) नामक पहल 2023 में अन्ना विश्वविद्यालय और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज के छात्रों द्वारा आरंभ की गई। इस अभियान का लक्ष्य कॉलेज परिसरों को ऊर्जा-सक्षम और पर्यावरण अनुकूल बनाना था। सौर पैनल स्थापित कर परिसर की लगभग 60% ऊर्जा आवश्यकता स्वच्छ ऊर्जा से पूरी की जाने लगी, जबकि जैविक कचरे से बायोगैस तैयार की गई जिससे कैंटीन में गैस उपयोग में कमी आई। साथ ही, जीरो-वेस्ट नीति अपनाई गई, जिसके तहत परिसर में प्लास्टिक और अपशिष्ट उत्पादन लगभग समाप्त कर दिया गया। यह उदाहरण दिखाता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में युवा किस तरह स्थायी व्यवहार परिवर्तन के मॉडल प्रस्तुत कर सकते हैं।

हिमाचल प्रदेश में “हिमालयन इको वॉरियर्स” (Himalayan Eco-Warriors) नामक संगठन ने 2021 से 2024 के बीच उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा देने और प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। युवाओं ने लगभग 25 ट्रेकिंग मार्गों से 30 टन प्लास्टिक कचरा हटाया और “Carry In - Carry Out” नीति लागू की, जिसके तहत हर पर्यटक को अपना कचरा स्वयं वापस लाने की जिम्मेदारी दी गई। राज्य सरकार ने 2023 में इस पहल को “Eco-Tourism Partner Programme” के रूप में मान्यता दी, जिससे यह अभियान पूरे राज्य में फैल गया।

असम में “क्लीन ब्रह्मपुत्र अभियान” (Clean Brahmaputra Campaign) 2023 में गुवाहाटी के युवाओं द्वारा शुरू किया गया। “Riverine Youth Collective” नामक संगठन के माध्यम से छात्रों और स्थानीय समुदाय ने मिलकर ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे 12 किलोमीटर क्षेत्र से 20 टन ठोस अपशिष्ट हटाया। साथ ही, युवाओं ने नदी पारिस्थितिकी पर स्कूल स्तर पर कार्यशालाएँ आयोजित कीं, जिससे नई पीढ़ी को नदी संरक्षण के महत्व से अवगत कराया गया। इस पहल को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) द्वारा 2024 में “Young Environmental Leaders Award” से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर युवाओं की भूमिका सिर्फ अभियानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे अब ग्रीन टेक्नोलॉजी स्टार्टअप्स के माध्यम से आर्थिक और पर्यावरणीय दोनों क्षेत्रों में परिवर्तन ला रहे हैं। Startup India (2024) की रिपोर्ट के अनुसार, देश में लगभग 280 युवा-नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स सौर ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, ईको-कृषि और स्वच्छ तकनीक के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इनमें “Oorja Development Solutions” (दिल्ली), “Greenjoules Pvt. Ltd.” (पुणे) और “Climatenza Technologies” (बेंगलुरु) जैसे स्टार्टअप्स प्रमुख हैं, जिन्होंने कार्बन उत्सर्जन में कमी और हरित रोजगार सृजन में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि भारत के युवा केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य नहीं कर रहे, बल्कि वे नीतिगत सुधार, सामाजिक नेतृत्व और तकनीकी नवाचार को जोड़ते हुए एक समग्र जलवायु समाधान मॉडल तैयार कर रहे

हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जल पुनर्जीवन, शहरी क्षेत्रों में अपशिष्ट प्रबंधन, पर्वतीय क्षेत्रों में पारिस्थितिक पर्यटन और राष्ट्रीय स्तर पर हरित उद्यमिता - ये सभी युवाओं की रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता और जलवायु के प्रति उनकी वैज्ञानिक प्रतिबद्धता को सशक्त रूप से प्रदर्शित करते हैं।

चुनौतियाँ

युवाओं की सक्रिय भागीदारी के बावजूद, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कई चुनौतीपूर्ण बाधाएँ मौजूद हैं। सबसे बड़ी चुनौती तकनीकी और संसाधन संबंधी असमानताएँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे कस्बों में पर्यावरणीय परियोजनाओं के लिए आवश्यक उपकरण, प्रशिक्षण और डिजिटल संसाधनों की कमी युवाओं के प्रयासों को सीमित करती है। इसके अतिरिक्त, कई बार युवाओं के द्वारा आरंभ की गई परियोजनाओं को वित्तीय सहायता और सरकारी समर्थन पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाता, जिससे उनके नवाचार और पहल की प्रभावशीलता घटती है।

दूसरी चुनौती नीति निर्माण और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में युवाओं की सीमित भागीदारी है। पर्यावरणीय नीतियाँ अक्सर तकनीकी विशेषज्ञों और वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा तय की जाती हैं, जबकि युवाओं के विचार, नवाचार और स्थानीय अनुभव को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता। इसके परिणामस्वरूप युवा वर्ग की रचनात्मक क्षमता और व्यवहारिक सुझाव नीति निर्माण में प्रभावी रूप से शामिल नहीं हो पाते।

तीसरी चुनौती शैक्षिक और सामाजिक जागरूकता की कमी है। अधिकांश शिक्षण संस्थानों में पर्यावरण शिक्षा का सैद्धांतिक स्वरूप अधिक है और व्यावहारिक अनुभव या नवाचार पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। इसके अलावा, समाज में युवाओं की भूमिका को लेकर कई बार परंपरागत सोच और अपेक्षाएँ उन्हें प्रभावी रूप से सक्रिय होने से रोकती हैं।

निष्कर्ष और सुझाव

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि युवाओं की सक्रिय भागीदारी जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के लिए निर्णायक भूमिका निभा सकती है। युवा वर्ग में ऊर्जा, नवाचार, नेतृत्व और अनुकूलनशीलता जैसी विशेषताएँ विद्यमान हैं, जो उन्हें स्थानीय और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली बना सकती हैं। यदि उन्हें उचित संसाधन, तकनीकी प्रशिक्षण और नीति निर्माण में सहभागिता का अवसर दिया जाए, तो वे न केवल पर्यावरणीय सुधार में योगदान देंगे बल्कि सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की दिशा में भी ठोस परिवर्तन ला सकते हैं।

सुझाव स्वरूप, यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में ग्रीन इनोवेशन लैब्स स्थापित की जाएँ, जहाँ युवा तकनीकी नवाचार और परियोजनाओं को लागू कर सकें। इसके अलावा, सरकार और वित्तीय संस्थानों को युवा केंद्रित हरित फंडिंग उपलब्ध करानी चाहिए ताकि नवाचार और स्टार्टअप्स को स्थायित्व मिल सके। शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण विज्ञान और जलवायु परिवर्तन को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करना चाहिए, साथ ही ग्रामीण और शहरी युवाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म और प्रशिक्षण के माध्यम से जोड़ना चाहिए।

अंततः, यदि समाज, सरकारी संस्थाएँ और शैक्षणिक संस्थान युवाओं की ऊर्जा, रचनात्मकता और नेतृत्व क्षमता को संरचित रूप में मार्गदर्शन दें, तो युवा पीढ़ी जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने और पर्यावरण संरक्षण को सशक्त बनाने में एक निर्णायक शक्ति बन सकती है। यह स्पष्ट करता है कि युवा न

केवल भविष्य के नागरिक हैं, बल्कि वर्तमान समय में परिवर्तन के प्रेरक भी हैं।

संदर्भ

1. **आईपीसीसी (2023).** छठी मूल्यांकन रिपोर्ट: प्रभाव, अनुकूलन और संवेदनशीलता। जिनेवा: इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज।
2. **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (2023).** भारत की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट। नई दिल्ली: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC)।
3. **संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (2023).** युवा और जलवायु कार्यवाही: वैश्विक परिदृश्य। नैरोबी: संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)।
4. **नीति आयोग (2024).** भारत में युवा और सतत विकास। नई दिल्ली: नीति आयोग।
5. **यूथ क्लाइमेट नेटवर्क इंडिया (2024).** भारत में युवाओं द्वारा संचालित जलवायु पहलों की वार्षिक रिपोर्ट। नई दिल्ली।
6. **सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (2024).** भारत की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट। नई दिल्ली: विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र (CSE)।